कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

यतेमहि स्वराज्ये

ISSN 2249-2976

International Refereed

Pramāna

Research Journal

Editor-in-Chief
Acharya (Dr.) Shilak Ram

आचार्य अकादमी

शाश्वत जीवन सच्चा जीवन

Acharya Academy
Bharat
ISO 9001:2008

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
website : www.pramanaresearchjournal.com
Impact Factor : 4.005

यतेमहि स्वराज्ये
ISSN : 2249-2976

Pramāna

Research Journal

(Art, Literature, Humanity, Social Science, Commerce, Management, Law & Science Subjects)

(Indexed & Listed at :
Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest, U.S.A.)
Copernicus, Poland
Research Bib., Japan
(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))
UGC Approved List Sl. No. 41241

Year : 8
Issue : 31(ii)
January-March 2019
www.parmanaresearchjournal.com

Acharya Academy, Bharat

ISO : 9001-2008

योगमते चित्तवृत्तिव्यवस्थानां विश्लेषणात्मकमध्ययनम्
सुनीत कुमार 122-126
स्वदेश दीपक के 'कोर्ट मार्शल' में दलित-चेतना
डा० निर्मल सिंह 127-130
ਪਰਵਾਸੀ ਪੰਜਾਬੀ ਗ਼ਜ਼ਲ : ਨਸਲਵਾਦੀ ਪਰਿਪੇਖ
ਲਤਾ ਸਿੰਘ 131-134
प्राचीन भारत में वर्ण व्यवस्था का औचित्य: एक अध्ययन
डा. सज्जन सिंह 135-137
प्रेमचन्द के साहित्य में दलित चेतना : एक समीक्षा
भुवनेश कुमार परिहार 138-142
The Concept of Self with Special Reference to Buddha Philosophy
Dr. Monoranjan Das 143-146
महिला शिक्षकों के व्यावसायिकरण का उनके कार्य संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन
डॉ. शोभा पुष्कर, श्रद्धा तिवारी 147-149
Nature of Knowledge on Account of K. C. Bhattacharyya
Md. Shafiqul Islam 150-155
India–US Strategic Relations: An Assessment
Doli Sharma 156-165
ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय महिला पत्रिकाएँ
डॉ. ओमप्रकाश सैनी 166-169
सन् 1947 ई. के पश्चात की दलित कहानियों में सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक सरोकार
डॉ. ओमप्रकाश सैनी 170-177
चार्ल्स ग्रांट : भारतीय इतिहास लेखन में योगदान
हेमन्त कुमार 178-183
Role of Judiciary in Contractual Employment
Dharam Pal Singh Punia 184-188
Globalisation, international migration and India
Pooja Monga, Dr. Madhu Ahlawat 189-193
Compensatory Jurisprudence: Compensation to Victims from State
Jyoti 194-198
Major Environmental Issues in India impact and Prospect
Dr. Madhu Ahlawat 199-203
मानवीय मूल्यों का स्पष्टीकरण
राजश्री 204-209
भारतीय शास्त्रीय संगीत में घरानों का इतिहास, परिभाषा एवं महत्त्व
जगदीश कुमार 210-213
Communal Violence
Mukul Gupta 214-220
Human Resource Development Audit
Diksha Sharma 221-226
Problem Faced by Women Police: A Case Study of Haryana
Jyoti 227-231

UGC Approved No. 41241
Impact Factor : 4.005

Pramāna
International Refereed

Research Journal (ISSN : 2249-2976)
Year-8, Issue-31(ii) (Jan.-March 2019) (Page No. 170-177)

सन् 1947 ई० के पश्चात की दलित कहानियों में सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक सरोकार

डॉ० ओमप्रकाश सैनी
एसोसिएट प्रोफेसर आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

शोध-आलेख सार

हमारे गांव देहातों में आज भी दलितों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है। डॉ. अम्बेडकर का यह कथन किसी भी दृष्टि से गलत नहीं है कि 'हिंदुओं का गांव समाज-व्यवस्था की प्रयोगशाला है। वह हिन्दुओं को एक प्रकार का उपनिवेशवाद है, जो अछूतों को यातना देने के लिए है।' दलित कहानियाँ राजनीति के विद्रूप चेहरे को बेनकाब करती है। ये कहानियां उस कड़वे सच को उघाड़ती है जिसमें 'पंचायती राज संस्था' के नाम पर दलितों के हितों से न केवल खिलवाड़ होता है, बल्कि उन्हें कठपुतली बनाकर नचाया जाता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में सवर्ण सामंतों द्वारा ईमानदारी से कर्त्तव्यों का पालन नहीं किया जाता बल्कि कुत्तर्कों द्वारा दलितों के अधिकारों का हनन किया जाता है। दलित कहानियां इन्हीं सत्यों की सच्ची बानगी हैं।

मुख्य-शब्द : ब्राह्मणवाद, सामंतवादी प्रवृत्ति, समाज व्यवस्था, अनुसूचित जाति, सामाजिक सद्भाव ।

प्राचीन काल से ही दलितों के उत्थान एवं उनकी सामाजिक स्थिति को सुधारने के लिए अनेक आंदोलन चलाए गए, किन्तु स्थिति 'जस की तस' बनी रही। आखिर ऐसा क्यों हुआ? संभवत: या तो ये आंदोलन सही राह नही पकड़ पाए या फिर आंदोलनों के सूत्रधारों की मंशा में खोट रहा। कुछ भी हो समस्याएं बरकरार है। हिन्दी साहित्य में साहित्यकारों का एक वर्ग जिसे आज की भाषा में सवर्ण या गैर दलित साहित्यकार भी कहा जा सकता है, निरंतर दलितों की चिंता करता रहा है। ध्यान रहें कि साहित्य के लिए 'दलित' और 'सवर्ण' साहित्य जैसे शब्द आधुनिक युग की देन है। सवर्ण साहित्यकारों का यह वर्ग जो दीन-दलित उपेक्षित एवं पीड़ित को साहित्य में अभिव्यक्त प्रदान करता रहा है। आगे चलकर उसी अभिव्यक्ति को दलित चेतना का नाम दिया गया। यद्यपि दलित साहित्यकार इसके सूत्र आदिकाल में सिद्धों, नाथों एवं बौद्धों में अथवा कबीर, रैदास आदि संतों की विचार सारणियो में खोजते है। आधुनिक युग मे गैर-दलित लेखकों में निराला से लेकर नागार्जुन तक का नाम आता है। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द ने किसानों, स्त्रियों एवं दलितों को विषय बनाकर अनेक उपन्यास और कहानियां लिखी है। प्रसिद्ध आलोचक मैनेजर पांडेय प्रेमचन्द की कहानी 'ठाकुर का कुआं' के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए कहते है-'ठाकुर का कुआं, केवल एक कुआं नही है, बल्कि सारा हिन्दू समाज ठाकुर का कुआं है, जिसमें अछूतों को डूब मरने की सुविधा तो है पीने का पानी लेने की आवश्यकता नही।" हिन्दू समाज और उसके एक अभिन्न अंग 'ठाकुरों' की दंबगई का यह खुला चित्रण है। बड़े खेद की बात है कि मैनेजर पांडेय जैसा आलोचक युगीन सत्य को समझने की कोशिश ना कर व्यर्थ में दलित हितैषी होने का दावा कर रहे है। मेरी समझ से प्रेमचन्द ने ऐसा दिखाकर ठीक ही किया है। यदि वो ऐसा ना करते तो शायद दलितों

UGC Approved No. 41241
Impact Factor : 4.005

Pramāna
International Refereed

Research Journal (ISSN : 2249-2976)
Year-8, Issue-31(ii) (Jan.-March 2019) (Page No. 170-177)

सन् 1947 ई० के पश्चात की दलित कहानियों में सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक सरोकार

डॉ० ओमप्रकाश सैनी
एसोसिएट प्रोफेसर आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल (हरियाणा)

शोध-आलेख सार

हमारे गांव देहातों में आज भी दलितों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है। डॉ. अम्बेडकर का यह कथन किसी भी दृष्टि से गलत नहीं है कि 'हिंदुओं का गांव समाज-व्यवस्था की प्रयोगशाला है। वह हिन्दुओं को एक प्रकार का उपनिवेशवाद है, जो अछूतों को यातना देने के लिए है।' दलित कहानियाँ राजनीति के विद्रूप चेहरे को बेनकाब करती है। ये कहानियां उस कड़वे सच को उघाड़ती है जिसमें 'पंचायती राज संस्था' के नाम पर दलितों के हितों से न केवल खिलवाड़ होता है, बल्कि उन्हें कठपुतली बनाकर नचाया जाता है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में सवर्ण सामंतों द्वारा ईमानदारी से कर्त्तव्यों का पालन नहीं किया जाता बल्कि कुत्तर्कों द्वारा दलितों के अधिकारों का हनन किया जाता है। दलित कहानियां इन्हीं सत्यों की सच्ची बानगी हैं।

मुख्य-शब्द : ब्राह्मणवाद, सामंतवादी प्रवृत्ति, समाज व्यवस्था, अनुसूचित जाति, सामाजिक सद्भाव ।

प्राचीन काल से ही दलितों के उत्थान एवं उनकी सामाजिक स्थिति को सुधारने के लिए अनेक आंदोलन चलाए गए, किन्तु स्थिति 'जस की तस' बनी रही। आखिर ऐसा क्यों हुआ? संभवत: या तो ये आंदोलन सही राह नही पकड़ पाए या फिर आंदोलनों के सूत्रधारों की मंशा में खोट रहा। कुछ भी हो समस्याएं बरकरार है। हिन्दी साहित्य में साहित्यकारों का एक वर्ग जिसे आज की भाषा में सवर्ण या गैर दलित साहित्यकार भी कहा जा सकता है, निरंतर दलितों की चिंता करता रहा है। ध्यान रहें कि साहित्य के लिए 'दलित' और 'सवर्ण' साहित्य जैसे शब्द आधुनिक युग की देन है। सवर्ण साहित्यकारों का यह वर्ग जो दीन-दलित उपेक्षित एवं पीड़ित को साहित्य में अभिव्यक्त प्रदान करता रहा है। आगे चलकर उसी अभिव्यक्ति को दलित चेतना का नाम दिया गया। यद्यपि दलित साहित्यकार इसके सूत्र आदिकाल में सिद्धों, नाथों एवं बौद्धों में अथवा कबीर, रैदास आदि संतों की विचार सारणियो में खोजते है। आधुनिक युग मे गैर-दलित लेखकों में निराला से लेकर नागार्जुन तक का नाम आता है। कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द ने किसानों, स्त्रियों एवं दलितों को विषय बनाकर अनेक उपन्यास और कहानियां लिखी है। प्रसिद्ध आलोचक मैनेजर पांडेय प्रेमचन्द की कहानी 'ठाकुर का कुआं' के बारे में अपने विचार प्रकट करते हुए कहते है-'ठाकुर का कुआं, केवल एक कुआं नही है, बल्कि सारा हिन्दू समाज ठाकुर का कुआं है, जिसमें अछूतों को डूब मरने की सुविधा तो है पीने का पानी लेने की आवश्यकता नही।" हिन्दू समाज और उसके एक अभिन्न अंग 'ठाकुरों' की दंबगई का यह खुला चित्रण है। बड़े खेद की बात है कि मैनेजर पांडेय जैसा आलोचक युगीन सत्य को समझने की कोशिश ना कर व्यर्थ में दलित हितैषी होने का दावा कर रहे है। मेरी समझ से प्रेमचन्द ने ऐसा दिखाकर ठीक ही किया है। यदि वो ऐसा ना करते तो शायद दलितों